

॥ प्रीति ॥

॥ प्रकाशरत्न वृत्त प्रथम ॥

॥ श्री ॥ ४३६ ॥ पत्र ॥ ३५ ॥

आशा चरित्र

2272

ASHA ARCHIVES

महोन्मः॥ जयजयसतगुरुदीनानायः अद्भुतमहीमा
नकोंबोधकरोः मोकोंअंतरजामी॥१॥ तुहीबापमा
तुजवीनःआधारनाहि॥ आदअवसानतुहियेकःवी
॥२॥ वीचारकरीकेंमनमोंदेखाःशास्वतकधूनाहि॥
कहोःभासेसबघटसाई॥३॥ शिष्यवचनसुनीकेंसं
॥ सुएरलाकरनावसोंःएकाग्रकरीकेंचित्त॥४॥ चि
नाहिःतोलोनेहीहीत॥ वेदशास्त्रपुराणसर्वःएसीक
ीच्यब्रह्महजुमनबुद्धिसोंपर॥ आत्मप्रवीतगुरुप्र

वीतःशास्त्रीतुंविवारकर॥५॥ वीचारवाकोंशिष्यकहीयेःजासोंसंशय
जाय॥ संशयमोंज्वांतीहोएःप्राणीगोतेखाये॥६॥ गोतेखायेअजीमानमों
संसारसाचमाए॥ मेंपंडीतसबसोंजानीःएसामनमोंजाए॥७॥ काव्यव्या
कर्णपढीकेंकयेशब्दकोजान॥ शब्दज्ञानसोंअमहोयेःवाढेदेहकोजान
॥८॥ देहनावसोंप्राणीनुलेःप्रपंचसाचभासे॥ प्रपंचतोसाचोनाहिःदेखत
देखतनासे॥९॥ मृगजलमेंजलनहीःजोंअन्नकोंजान॥ प्रपंचएसोशि
ष्यःसाचकरकेंमान॥१०॥ पंचनुतत्रीगुणसोंःसकलशृणीहोय॥ आत्मा
यामोंसाक्षीरूपःगुरुमुखसोंजोये॥११॥ आत्माकेअज्ञानसोंःप्रपंचसाचो

जाए ॥ अंधकार में राजा को: सरप कर के माने ॥ १३ ॥ अंधकार में सर्प जासे:
साच दोरी जाए ॥ वैसो अज्ञान में शिष्य: माया साचहि मान ॥ १४ ॥ सीप के बी
खे रो प्या भास: दूर में नासे जाई ॥ मन्त्री धजा के देखीये: साचो कछु नाहि ॥ १५ ॥
माया मायी कमी प्या जासे: अनुभव सो नाहि ॥ अनुभव बीणा प्राणी: बाँको
न मीले साई ॥ १६ ॥ रत्ना करतु ही ब्रह्म देह को संग डार ॥ देह अपवित्र पाप
की रास: काम क्रोध को मार ॥ १७ ॥ देह के कर्म गुण सो होई: तुं तो साही जा
न ॥ सब में व्यापक सब में नारा: साच ही करी के मान ॥ १८ ॥ आद अवसान
ये कहि हे: मध्ये ही डुट जासे ॥ अविनाश तु ही तेरा: एतो सब हि नासे ॥ १९ ॥

तुं अपने मन में एसा जान: ब्रह्म मे ही मेरा ॥ कर्म कर्म मो को नाहि: में सब सो न्या
रा ॥ २० ॥ एसी जावना अखंड: रत्ना करतें करनां ॥ आप में आप समा के: ना
ही हो के रहनां ॥ २१ ॥ जो जो दृष्टी जास होई: सो सो माया जान ॥ नाम रुपानी
त ब्रह्म तु ही: साच ही कर के मान ॥ २२ ॥ नाम रुप सो माया: आत्म त्रमे होये ॥
नाम रुप को डारी के: बीचार करी के जोये ॥ २३ ॥ तेरे अग्यान सो तो को: त्रमे प
री नल ॥ नल सो साच पानी के: कीई अपनी धूल ॥ २४ ॥ अपनी धूल तें मत्त क
र दुबी प्या को डार ॥ अहं ब्रह्मा स्मी मानी के: कल्पना के मार ॥ २५ ॥ कल्पना
सो अक मो: अनेक जासे जाई ॥ जो सपने में राजा नयो: जाग्रत होते ना

ही॥२६॥ जाग्रुत होते सपनां नाहिः अनुभव सों माया॥ नाश हो कें ब्रह्म ही रहै ऐ
 सानी गम गाया॥२७॥ कल्पना सों माया नामेः नीर्विकल्प सों नाही॥ आप ही ब्र
 ह्म होते प्राणीः कल्पना बीन स जाई॥२८॥ रत्ना कर कल्पना मत्त करः ब्रह्म तु ही
 तेरा॥ तुज सें सब श्रुती नामेः तुं इन सों नारा॥२९॥ सत गुरु वाक्य सुनी केंः श्री
 ध्वनी नती करे॥ ब्रह्म ज्ञान को नाम करोः चरणोशी स धरे॥३०॥ मे ही ब्रह्म कै
 कर स्वामीः मेरा होई नाश॥ ब्रह्म सा स्वतः श्री नाशः या कों करो नाम॥३१॥ त ३१
 अहुर हात कों मो कों प्रमाणः ब्रह्म तो अप्रमाण॥ मो कों जात गोत स्वामीः ब्र
 ह्म अजात जान॥३२॥ ब्रह्म अनाम रूपा तीतः मो कों रूप नांम॥ ब्रह्म हे जीनी

विक्ल्पः मो मो वसे काम॥३३॥ ब्रह्म अदृश्य अगोचर नाहिः मेरो होई नाम
 ब्रह्म व्यापक में ये क देखिः घर बार कों दाश॥३४॥ ब्रह्म कों नहि माता पिताः
 में मात पिता सों जान॥ ब्रह्म नीर्मल निर्विकारः मो मो विकार जान॥३५॥ स्वा
 मी रूपा कुरी कें मो परः कहे तुं ही ब्रह्म॥ ए वाक्य सुनी कें जीये मोः कुरुवा मेरे अ
 म॥३६॥ मे ही ब्रह्म कै सा स्वामीः या को अनुभव करो॥ में अज्ञान मूढ मती
 शीर पर हात धरो॥३७॥ अपणे ही त के कारण स्वामीः नील ज हो कें जान॥ चर
 न पर श्री सध सो क ह्यो मो कों जान॥३८॥ ज्ञान सों प्रकाश होयेः भ्रमना
 सब मीटे॥ सत गुरु बोले सुन बचनः ज्या मो दुबी धा फीटे॥३९॥ अर्ध प्रश्न

निलेकीयोः ज्ञासोंहोयेज्ञान॥ नीलयेकरीकेंतोकोकहोः तजदेहकोभान॥ ४०
प्रथमअध्याएणनयोः सावधहोकेरहनां॥ द्वितीयमेंप्रश्नकहोः वाकोम
नमोंधरनां॥ ४१॥ जेजेतेएंप्रश्नकीयोः वाकोकरोबिवार॥ गुरुकपासोंगम
नाथः बोलेअनुभवमार॥ ४२॥ प्रकाशरत्नाकरग्रंथयहः शिष्यकोंबोधकी
यो॥ रत्नाकरकेसंवादमेंः ग्रंथनीर्मोननयो॥ ४३॥ ॥ इति श्रीप्रकाशरत्नाकर
रूपनीषद्भागवतविद्यायां वैराग्ययोगो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १॥ ॥ रत्ना
करतेंसावधहोकेः सुनरेआत्मज्ञान॥ ज्योआत्मज्ञानविनांप्राणिपशुरूपक
रकेंमान॥ १॥ शुनअशुनकोज्ञानः पशुकुजैसोनाहि॥ वीषयकोवैसोफ

रेः मायाकेवनमाहि॥ २॥ मायावनमेंविषयेतएः प्रेमप्रीतमेंखाय॥ का
मक्रोधखोन्नमेंः आघोंचरतोजाय॥ ३॥ बीवेकहीनअंधापशुः त्रांतीकु
पमेंपरे॥ अनुभववीनांनानामत्तकोः अखंडतर्ककरे॥ ४॥ ज्ञासोंअपणो
हीतनोहीः वाकेकरेअनीमान॥ मेंकोएकाहांसोंआयाः याकोनहीज्ञान॥
५॥ असुज्ञानकोज्ञानकहीयेः औरसबअज्ञान॥ सतगुरुवीनाप्राणीडुबे
साचहीकरीकेंमान॥ ६॥ मंत्रयंत्रध्यानधारणः कहेसोसुरुज्ञान॥ सतगुरु
वहिशिष्यः ज्ञासोंपाईयेज्ञान॥ ७॥ जारणमारणस्तंननमोहनः याकोकरे
उपदेश॥ स्तोत्रकवचवहोतकहेः नहिज्ञानकोलेश॥ ८॥ शक्तीसुजाअनल

नहो करे मद्य को पान ॥ बगले के सरीखे प्राणी ॥ धरी के बड़े ध्यान ॥ १० ॥ ज्या में विष
य सुख प्राप्त ॥ वाकों जन करे ॥ कामी कर्म करी के ॥ दुबी ध्या मन में धरे ॥ ११ ॥
कल में गुरु बहोत नये ॥ धन के कारण भाई ॥ शिष्य जन की आशा करे ॥ भाव
मन में नाहि ॥ १२ ॥ धन मान की आशा करी के ॥ जो कोई कहै गान ॥ वाको ही
तक बहु नोहि ॥ सावो करी के मान ॥ १३ ॥ मन बुधी में जो जो आवे ॥ ते ते माया
जान ॥ माया मायी कसा चनाही ॥ वासों होई हान ॥ १४ ॥ कल्पना में माया भासे
नीर्विकल्प सो नाहि ॥ परावाचा पार न जाए ॥ ए सो हे जी साई ॥ १५ ॥ मंत्र यंत्र
ध्यान धारण को ॥ मेरो नहि ज्ञान ॥ सद्य आत्मा घर में लखावो ॥ सावो करी

के मान ॥ १६ ॥ मु ए पीछे मुक्ती होये ॥ ए सा जानी कहै ॥ वाके वचन शिष्य जन
नीर्विकल्प रहे ॥ १७ ॥ आघों मुक्ती साच माने ॥ वाकों हित नोहि ॥ जपत पत्र
नुष्ठान ॥ सुखे करो कोई ॥ १८ ॥ जीतां जीवों में मुक्त होई ॥ ए वासों कही ये जान
॥ ज्या जान सो भ्रम एण फीरे ॥ लागे हर को ध्यान ॥ १९ ॥ हरी रूप जगत्ता से ॥ त
रही मुक्ती होये ॥ शास्त्र प्रचीत गुरु प्रचीत ॥ आत्म प्रचीत जोये ॥ २० ॥ गुरु परं
परा सो जो कछू आयो जान ॥ वाकों नीर्हय करी के कहो ॥ सुनीये सावधा
न ॥ २१ ॥ माहादेव नं पार्वती को ॥ जान को बोध कीयो ॥ पार्वती नें मछी इको ॥
रुपा करी के दीयो ॥ २२ ॥ आदिनाथ महादेव ॥ पार्वती उदो नाथ ॥ उदो नाथ

सों मछी इकों। तानहुवा प्राप्त॥ २२॥ मछी इनाधनें गोरखकों। कीयो तान प्र
काश॥ गोरख सों मुक्ता बाई की। पूर्ण नई आश॥ २३॥ अनुभव सों मुक्ता बा
ई मुक्त होये कें रही॥ मुक्ता बाई ने चांग देवकों। तान की ली कहि॥ २४॥ चांग
देव सों विमलानंदः पायो ब्रह्म तान॥ विमलानंद सों जनकानंदः पायो पद
नीर्वान॥ २५॥ जनकानंद सों नर सों हानंदः नीर्नय पद पायो॥ ज्यो पदकों मो
व नय नाहिः। ए सानी गम गायो॥ २६॥ नृसिंहानंद सों पुरुषोत्तमः पायो अ
पनो मुख॥ ज्यो मुख सों दुबी ध्यामीटे। हरे नव को मुख॥ २७॥ पुरुषोत्तम
सों मुक्तानंदः हुवा आ पही ब्रह्म॥ माया मायी कबीन सगयी। मार गयो न

म॥ २८॥ मुक्तानंद सों एकानंदः पायो अनुभव खुए॥ येकानंद सों पुरुषो
त्तमः नयो ब्रह्म पूर्ण॥ २९॥ पुरुषोत्तम सों सिद्धानंदः पूरण वीचार कीयो॥ सि
द्धानंद ने रामानंद सों ब्रह्म तान दीयो॥ ३०॥ रामानंद मेरे नामः सुनर लाक
र वात॥ परंपरा सों तान आयो। बाकी कहि ज्ञात॥ ३१॥ तेही तान तो कों कहें
गाः। हो एर हो सावधान॥ अपणे ही ते के कारणः साच ही कर कें मान॥ ३२॥ शुक्र
वामदेव ऋषिः जनकादिक जान॥ ज्यो तान सों नमना मारी। पाये पद नीर्वा
न॥ ३३॥ नारद तुंबर व्यास रुसी। वसी ए ब्रह्म तानी॥ या तब लकी अनुभव
पायो। शंकर बेठा ध्यानी॥ ३४॥ ज्यो तान पाए देह सों। बीदेह हो कें रहीये॥ ३५॥

देहिहोतेअपनोंसुखःगुरुकृपासोंहोलेये॥३५॥रत्नाकरसावधहोकेःप्रेम
सोंअवणकीजे॥अवणहोतेमननकरीकेःअनुभवसुखलीजे॥३६॥मन
नवीनाअनुभवनोहि साचकरकेमान॥वाकेकारणलीनहोकेःवेढीयेसा
वधान॥३७॥सबसोंमननीकालीकेःअवणमहिधर॥मेरेवाक्यसुनीके
नीर्णयेवाकोंकर॥३८॥नीर्णयकरीकेःअपणेमनमोंःमंहिब्रह्ममान॥ब्रह्म
होयेकेःआपनरहीयेःवाकोंकहीयेजान॥३९॥ब्रह्मबुद्धीतेराःअनादसि
द्धजाए॥ज्ञानविनारतनाकरःबाठेदेहकोजान॥४०॥प्रकाशविनांअंध
धकारःनररह्योअंधरमहि॥प्रकाशहोतेअंधकारकोंःजगीकहीनाही॥४१॥

वैसोज्ञानविनांशिष्यःहोयीमायात्रास॥ज्ञानहोतेमायाकोंःहोयेसहजो
नाश॥४२॥प्रकाशहोतेअंधकारःप्रकाशहुवाजान॥वैसोज्ञानहोतेशी
ष्यःमायाब्रह्महीमान॥४३॥अज्ञानसोंमेरादेहःसाचहीकरकेमाने॥स्त्री
पुत्रघरधनसंपत्तीःमेरासबहीजाए॥४४॥देहतोहेजुनाचीवंतःतुंतोअ
वीनाश॥आरदेहकेंपरेशीष्यःहरेतरोवास॥४५॥सबमोंआपकसब
सोंन्याराःजैसोजलमोंःप्रकाश॥४६॥रत्नाकरतेरासबमोंःयैसोहरेवास॥
४७॥रत्नाकरकहेसतगुरुस्वामीःआरदेहकोंज्ञान॥नीर्णयकरीकेःआपन
कहीयेःमोकोंवपरमान॥४८॥आरदेहतेकोएकोएःयाकेहीज्ञानब्रह्म॥

ज्यासोंमनकीअमनामीरेःहरेमायामहो॥४८॥कोंएदेहकोंक्याप्रमाणः
 उनकेवर्णकैसे॥कृपाकरीकेंबोधकरोःजैसेहेजीतैसे॥४९॥शिष्यवचनसु
 नीकेंःबोलेसतगुरुसाई॥द्वितीयेअध्यायेएएनयोःकहोगातीजेमाही
 ॥५०॥तीसरेअध्यामोंचारदेहकोःकोंनोकरोनास॥सावधहोकेंसुनर
 त्नाकरःज्यासोंहोयेप्रकाश॥५१॥सिद्धानंदकेप्रसादेंःरामानंदकहेतान
 ॥रत्नाकरकेसंवादसोंःग्रंथजयोनीर्मान॥५२॥प्रकाशरत्नाकरग्रंथय
 हःज्यासोंसंशयजाय॥अनुनववीनांयाग्रंथमोंःप्राणीगोतेखाये॥५३॥
 ॥५४॥इति श्री प्रकाशरत्नाकरग्रंथशिष्यअनययोगोनामद्वितीयोऽध्यायः॥

रत्नाकरतेंसावधहोकेंःकथाअवएकीजे॥मीनुपएतजीकेंःअनुनवसु
 खलीजे॥॥चारदेहकोनीएयकरीकेंःनोकोंकहेतान॥ज्यातानसोंःअ
 नुनवहोयेःसद्यमीलेनगवान॥२॥उंकारबींदुसंयुक्तःयोगीनीत्यध्यावे॥
 उंकारकोंनीएयकरतेःआत्मापरमोंपावे॥३॥अकारउकारमकारःअ
 र्धमात्राजान॥उंकारकोंनीएयकरतेंःपावेपदनीर्वान॥४॥उंकारसोना
 दब्रह्मःआदीमायाकोमुक्त॥वेदशास्त्रपुराणसर्वःउंकारकेफूल॥५॥उंका
 रसोंसबष्टहीहोयेःउंकारष्टहीमहि॥उंकारसोसगुणब्रह्मःयामोंसंदे
 हनाहि॥६॥अकारसोहीरजोगुणःब्रह्मादेवतजान॥ष्टहीकीसर्वउत्पत्ति

करे सुनीये सावधान ॥१॥ उकार सोही सत्व गुणः बिस्म देवत जान ॥ सर्व
 श्चष्टी को पालन करेः यामों संदेह नाहि ॥२॥ मकार सो तमोगुणः रुद्र देवत
 जान ॥ सर्व श्चष्टी को संहार करेः साचो करी कें मान ॥३॥ अर्धमात्रा सो माया
 जानः चैतन्य शक्ति जाई ॥ तीनो गुण उन सों होयेः सम जमन के माहि ॥४॥ म
 न के माहि सम ज एसाः में ईन सों दुर ॥ पूर्ण ब्रह्म मेहि मेराः सब सों हो जरूर
 ॥५॥ ईकार कों ज्ञान तो कोंः ब्रह्म तुही जान ॥ सत गुरु वीनां अनुच वनोही
 सुनीये सावधान ॥६॥ देह के नीर्णय करो शीघ्रः ज्या सों संदेह जाय ॥ रत्न
 कर एं प्रेम प्रीतिः धरे गुरु के पाये ॥७॥ ज्या सों मेरा संदेह जायेः यै सानी न

य करो ॥ दीन हीन जाणी कें स्वामीः सीर परहाय धरो ॥८॥ सत गुरु कहें सुन
 रे पूताः मन सों धरी कें जाव ॥ जाव वीनां जो जो कीजेः सो सो मीथ्या माव ॥९॥
 मेरो वचन आघों करी केंः पाछे पाछे जाव ॥ वचन कों विश्रान्त जाहांः वाहां ध
 रीये जाव ॥१०॥ ब्रह्म हेतु अनुर्वाच्यः माया शब्द सों आवे ॥ ब्रह्म को अनुच
 व होतेः माया समुल जावे ॥११॥ स्थूल देह सुहृद हातः ब्रह्म देवत जान ॥ अ
 कार मात्रा वैरवरी वाचाः त्रीकट को स्थान ॥१२॥ अधश्चुन्यर स्वमात्रकाः क
 र्वेदर जो गुण ॥ रक्त वर्ण पृथ्वी ततः श्रुजन क्रीया सुन ॥१३॥ जायुत अव
 स्मा पूर्व दीनाः ईश देव जान ॥ नैरुत्पको ए नैरुत्पदेवः सद्यो जात ब्रह्म मान ॥१४॥

खेचरी मुद्रा उर्मिकलाः पीपलीका मार्ग होये ॥ घटाकाशनेत्रस्थानः सत्य
 लोकजोये ॥ २१ ॥ वीश्वअत्रीमानीतंतवाद्यः साचो करीकें जान ॥ गायत्री
 प्रथमपादः गणेशदेवतामान ॥ २२ ॥ क्रीयाशक्तिचरनीर्णयः बडवाग्बी
 होये ॥ वीशायानंदअहंकारः स्थूलदेहमें जोये ॥ २३ ॥ स्थूलदेहको नीर्ण
 य कह्योः याकोंदीजे डार ॥ याकोसंगकीये प्रताः परीनामकों हार ॥ २४ ॥ जौ
 जो स्थूलदेहमें आयोः वाकोंवमनजै सोमान ॥ तदही तेरो हित होईः सत्य
 वचन जान ॥ २५ ॥ स्थूलदेहको साक्षीतुं तुजसें प्रकाश होये ॥ स्थूलके क
 र्ममनमें लिखनाहि वीचार करीकें जोये ॥ २६ ॥ पंचभुतमें स्थूलदेह होएः

याकों कह्यो विचार ॥ रत्नाकर सावध होकेंः सुनीये कथा सार ॥ २७ ॥ ज्यामें
 तेरो संदेह जायः एसा करवें लेनां ॥ मन स्थिर करीकेंः दुबी ध्या डार देण ॥ २८ ॥
 पंचभुतमें स्थूलदेह होयेः वाकों कह्यो वीचार ॥ एकत्राव सोमनमें धरतेः
 पावे परम प्रद सार ॥ २९ ॥ आकाश वायु तेजः अप एष्वी जान ॥ पांचमें
 पंचीस गुणः वाको करो व्याख्यान ॥ ३० ॥ काम क्रोध ह्यो न शिष्यः मोहो न
 ये जान ॥ अकाशके गुण ये हतुं तो साक्षी मान ॥ ३१ ॥ तुं तो अकाशको सा
 क्षीः आकाश गुण में नाही ॥ नमनाकों तजीकेंः समजो मन के माहि ॥ ३२ ॥
 इति आकाशनीर्णन ॥ ॥ प्रशरन चंचल्यगमनः अमन आकुचन हो

य॥ वायुके गुण यह प्रताः तजीये याकी सोये ॥ ३३ ॥ तुं तो वायु तत्व का साही
 गुण कर्म में न्यारा ॥ एसा मन में समजेः वही उत्तर पारा ॥ ३४ ॥ इति वायु नीर्वा
 न ॥ ॥ नीअ जोग च्छुधा प्रताः तषा आलस जान ॥ तेज के गुण ये ह जाणी के
 तजीये अजीमान ॥ ३५ ॥ तुं तो तेज को साहीः तेज कर्म में नाहि ॥ गुण क
 र्म सह जे होयेः तज न मनानाई ॥ ३६ ॥ इति तेज नीर्वा न ॥ ॥ तेज के गुण
 को तजी केः आघों सुनवी चार ॥ नीर्विकल्प हो के रहेः पावे अनुभव सार ॥ ३७ ॥
 स्नेह सुकर क प्रताः सूत्र मेद जान ॥ आप में ये गुण नयेः तुं तो साही
 मान ॥ ३८ ॥ तुं तो आप के साहीः जल के गुण में नाहि ॥ जल को जीवन तु

११

हीः समज मन के माहि ॥ ३९ ॥ जल के गुण को तजी केः साही हो के रही ए ॥ आ
 प ही ब्रह्म हो ते पुताः अनुभव को ल होये ॥ ४० ॥ रोम त्व चामां शनाडीः असी
 पांच मा गुण ॥ ए तो पृथ्वी में नयेः रत्ना कर ते सुए ॥ ४१ ॥ तुं तो आकाश को सा
 हीः आकाश हेतु ज माहि ॥ आकाश के गुण को ली सः रत्ना कर ते नाहि ॥
 ४२ ॥ आकाश गुण को तजी केः अवकाश हो के रही ये ॥ आप में सब जा
 णी केः राम राम कहोये ॥ ४३ ॥ पंच भुत में पंची स गुणः वाकों नीर्वाय कीयो
 ॥ स्थूल देह को नीर राण करी केः अनुभव सुख दीयो ॥ ४४ ॥ स्थूल देह को जात
 गोतः मातः पिता जान ॥ स्त्री पुत्र घर धन साराः स्थूल को मान ॥ ४५ ॥ स्थूल

कोंदेशपरदेशः सुखदुखदो नो होये ॥ स्थूलगारे कथूहि नाहि विचारक
 ॥ केंजोये ॥ ४६ ॥ स्थूलदेहकों एसामानोः जैसी तरु की छाया ॥ सबही छुट
 जाणी केंः डारदी जे माया ॥ ४७ ॥ रत्नाकर बीनती करेः धन्य धन्य सत गुरु स्वा
 मी ॥ स्थूलदेहको नीरशाल कीयोः धन्य अंतर जामी ॥ ४८ ॥ स्थूलदेहमें मे
 नाहिः एसानी श्वये नयो ॥ स्वामी रूपामें मेरे मनकोंः दैत नावगयो ॥ ४९
 स्थूलदेहके संगमें स्वामीः बहोत पायो दुख ॥ असन वसन की चिंता करतेः
 नहि छाए नरी सुख ॥ ५० ॥ अशन वसन प्रारब्ध प्राप्तः अपनो प्रेत्न नाहि ॥
 स्वामी रूपामें ऐसाः समजे मनके माहि ॥ ५१ ॥ स्थूलदेहको नीरशाल स्यो सु

१२

सुक्ष्मदेहको करो ॥ असल ज्ञानको ना सकरी केंः मन के वीकार हरो ॥ ५२ ॥ स्थू
 लदेह की कीड़ा स्वामीः स्वप्न सरीखी जासे ॥ शिष्य वचन सुनी केंः सत गुरु मनमें
 हासे ॥ ५३ ॥ तृतीयो अध्याय ए नयोः याकों मनमें धरना ॥ स्थूलमें मननी का
 ली केंः कथा श्रवण करना ॥ ५४ ॥ तेरी श्रद्धा देखी केंः तोकों कह्यो ज्ञान ॥ ज्ञाता
 नमें अम जायेः पावे पद नीरवान ॥ ५५ ॥ सिद्धानंद के प्रसादेंः रामानंद कह
 जान ॥ रत्नाकर के संवादमेंः ग्रंथ नयोनी मीन ॥ ५६ ॥ ॥ इति श्री प्रकाशारं
 लाकर ग्रंथ स्थूलदेह नीरशन योगो नाम तृतीयो ध्यायः ॥ ॥ धन्य धन्य सत
 गुरु स्वामीः थोर उपकार कीयो ॥ स्थूलदेहको बंधन छनमेंः नीशन कर दीयो

स्थूलदेहकेसंगसों: सबहीसावनासे ॥ साचोतोकधूनाही: अन्नजैसोनासे
 ॥ २॥ जाग्रुतहोतेसपणनाहि: वैसोमोकोंनयो ॥ स्वामीरुपासों: अनुभवहोते
 दैतजावसबगयो ॥ ३॥ अबलंगदेहकोस्वामी: अनुभवमोकोंकाजे ॥ अपनो
 जाणीरूपकरीकें: ब्रह्मज्ञानदीजे ॥ ४॥ सतगुरुकहेपुना: अब: होयेरहोसावधा
 न ॥ सबकीकारकोंमाहेर: सोलीगदेहजाण ॥ ५॥ जोलोलीगदेहकों: नीरा
 ननयोनहि ॥ तोलों: अनुभवमुख: नोहीकबहुनाई ॥ ६॥ लीगदेहअंगुष्ठप्र १३
 मान: स्वेतवर्णजान ॥ उकारमात्रुकविष्णुदेवत: श्रीहृत्कोस्थान ॥ ७॥ सत्वगु
 णसप्रभवस्ता: मध्यमावावाजान ॥ उर्ध्वश्रुएषदीर्घमात्रुका: यजुर्वेदमान ॥ ८॥

पालनक्रीयाआपतत्व: पश्यमदीशमान ॥ ब्रह्मणदेवइशानकोण: इशानदे
 वजान ॥ ९॥ वामदेवायेब्रह्मरुष: नुवरीमुशजोये ॥ धर्मिकलाविहंगममा
 र्ग: महाकाशहोये ॥ १०॥ कंठस्थानवैकुण्ठलोक: वितंतवाद्यजान ॥ तेजसअ
 जीमानी: सूर्यदेवतामान ॥ ११॥ द्वितीयेपादगायत्री: ज्ञानशक्तिजोये ॥ अ
 क्षरनीर्णयमंदोग्री: योगानंदहोये ॥ १२॥ कोहंअहंकारसमीपतामुक्ति: या
 कोत्यागकीजे ॥ काकवीष्टावरोवर: यादेहकोंमानीजें ॥ १३॥ जोजोमेनेकप
 नीकीई: वाकोंदीजेडार ॥ सबसपनोमानीकें: भजनकीजेसार ॥ १४॥ यामो
 सोंमननीकालीकें: आघोंअवएकीजे ॥ जोजोवीचरमों: आया: वाकों

त्यागकीजे ॥१५॥ छवीसकलाकोलीगदेहः वाकोनीएयकरो ॥ मनसावधकरी
 केंः कथाअवणकरो ॥१६॥ आकाशवायुतेजः अपृथ्वीजान ॥ पांचकेपचीस
 नयेगुणः वाकोकीजेव्याख्यान ॥१७॥ अंतःकर्णमनबुधीः चीतअहंकार ॥ आ
 काशकेगुणयेहः तजीयेअहंकार ॥१८॥ नीर्विकल्पसोंअंतःकरणः कल्पनाम
 नसोंहोय ॥ तुयाकोसाक्षीपुताः विचारकरीकेंजोये ॥१९॥ मननेजोजोकल्प
 नाकीई वाकोंतोकोंतान ॥ मनकेवेहेवारमेंतुनाहिः साचहीहतामान ॥२०॥
 मनकीछेजोकोईफारेः वाकीहोईहान ॥ मनकल्पनांकोंडारेः वहीसुखीजान ॥
 २१॥ मनमानेकोंसुखदुखः मनडारेकधूनाहि ॥ मनसोंपापपुण्यहोयेः संसा

रमनकेमाहि ॥२२॥ मनसोंसबशृष्टीजासेः शृष्टीमनकेमाहि ॥ मनसोंस
 बसाचहीहोयेः मनसोंदुबीध्यानाई ॥२३॥ ममौनेजोजोआवेपुताः तेतेसपना
 जान ॥ सपनेकोंसाचमानेः वहीमुखअपान ॥२४॥ सपनादेखेसोंसाचहेः स
 पणांसाचनाहि ॥ वैसालुहेंसाचहताः शृष्टीफुरीजाई ॥२५॥ फुटजाणीकेंम
 नकोंः याकोत्यागकीजे ॥ मनकेसाक्षीहोकेः अनुचवसुखलीजे ॥२६॥ मन
 कर्मकासाक्षीतुः मनकर्ममेंनाहि ॥ मनकोत्यागकरीकेंः सुखीहोएंगंजाई ॥
 मनजीतेंत्रीनुवनजीताः मनकासाक्षीहोये ॥ मनकल्पनामीध्याहेः सावध
 होयेकेंजोये ॥२७॥ जोजोमनकल्पनाहोएः वाकोनीअवकीजे ॥ बुधतेही

कहीयेइताःवीचारकरलीजे॥२९॥बुधजो जोनी श्रयकरेःवाकेंतो कें जाना
बुधीकासाहीतुहीइताःमीथ्याबुधीजाए॥३०॥चितनकरेसोचितःतुंचितमें
दुर॥चीतकर्ममेंतुं नाहिःसाहीतेंनरए॥३१॥चीतकर्मकों त्यागीकेंःनीची
तहोकेंरहना॥अहंकारकोतुंसाहीःवचनमनमेंधरना॥३२॥जो जो अ
हंकारमेंआयाःवाकेपरतुंजाए॥ब्रह्मरूपतुंहीतेराःतजदेहकोमान॥३३॥
मनबुधचितअहंकारःसपणेंसरीवामान॥याकेकर्मकोंतजीकेंःआघोसा
वधान॥३४॥आकाशमेंअंतःकरणपंचकःआकाशहेतुजमाहि॥अंतः
करणकासाहीतुंःयामेंसंदेहनाहि॥३५॥अंतःकरणकेंविकारकोंतजीकें

नीरहेतहोकेंरहना॥आपहीब्रह्ममानीकेंःआपमेंआपनरहना॥३६॥अंतः
तःकरणकेदेवतकहकेंःपंचआणकोंकहो॥नीर्विकल्पहोकेंरहनाःतजकेंमा
यामहो॥३७॥मनअध्यात्मसंकल्पआधीनतःचंद्रमादेवतजान॥याको
साहीआपहीब्रह्मःआपकोंआपतेंमान॥३८॥बुधीअध्यात्मबोधव्य
आधीनतःब्रह्मादेवतजाए॥यामेंबुधीकोंकर्महोयेःतसाहीमान॥३९॥
चीतअध्यात्मचितनःआधीनतःवासुदेवदेवतजाई॥यामेंचितकेंकर्महो
एःतुंयामेंलीसनाहि॥४०॥अहंकारअध्यात्ममेंआधीनतमीपन॥आधी
देवतसुनइताःमाहारुअपण॥४१॥चंद्रमाविराटकोमनःबुद्धितोचतु

गानन॥ वासुदेवचीतस्ताः अहंकारशंकरजान॥ ४२॥ अपणे अंतःकर्ण
 केनीर्शनहोतेः वीराटकोत्रयो॥ जाग्रुते सपणा जैसाः सबही बीनसग
 यो॥ ४३॥ अंतःकर्णकोनीर्शनत्रयोः याकों जतनकरनां॥ प्राणपंचक
 कोनीर्शनकहोः एकजावसों सुनना॥ ४४॥ व्यानसमानउदानस्ताः प्रा
 णअपानजाण॥ तुंपंचप्राणकोसाक्षीहोवेंः आपकों ब्रह्ममान॥ ४५॥
 वायुसों पंचप्राणभ्येः तुजसों नातोनाहि॥ याकों तजीकें अपणे होत
 आपकी जेनाई॥ ४६॥ प्राणपंचककोनीर्शनत्रयोः जानई दीयेके सुन॥
 ज्यासों तेरो होत होयेः वाकी कहोरुए॥ ४७॥ श्रोत्रत्वचाचक्षुपुताः जी

१६

काओरघ्राण॥ तेजसों त्रये शिष्यः तुंसाक्षीमान॥ ४८॥ अवणअध्या
 तमः श्रोतव्यआधीभुतएण॥ दीराआधीदैवतएताः तुंसाक्षीसुए॥ ४९॥
 त्वचाअध्यात्मशिष्यः आधीभूतस्पर्शनि॥ आधीदैवतवायुः स्थीरकीजे
 मन॥ ५०॥ घ्राणअध्यातमएताः आधीभूतगंधजाण॥ दैवतआश्वि
 नीदेवः साचक्ररक्तेमान॥ ५१॥ नेत्रअध्यातमरत्नाकरः देवएणं आधी
 भुतजाण॥ सूर्यदैवतसों दीसेंः तुंसाक्षीमान॥ ५२॥ जीकाअध्यात्म
 पुताः रसव्यआधीभुतजान॥ आधीदैवतवरुणः तुंसाक्षीमान॥ ५३॥ या
 मों ते एकेपाकीयाः वाकों वीचारकरनां॥ तुंसबको प्रकाशकः साक्षीहोये

केंरहनां॥५४॥तानईइयकोनीरनिनयोःकर्मईइयकोमुननां॥ज्याकोतजे
 हीतहोयेःसावधहोकेरहनां॥५५॥कर्मईइयेकेलननएकहोःबुद्धिस्थीरकर
 नां॥वाचापाणीपादसीस्यःपांचमांगुदसुननां॥५६॥जलसोंएपांचोनयेःतुं
 यामोंनाहि॥याकोतानतोकोःसमजमनकेमाहि॥५७॥वाचाअध्यात्मपु
 ताःवाचव्यआधीतुतजान॥प्रतीआधीदेवनःवासोंशब्दनान॥५८॥तुंश
 ब्दकोसाहीप्रताःशब्दमोनाहिमान॥शब्दातीतननतुहीःडारीदेअनीमा
 न॥५९॥अनुवाच्यमोंवचनःवासोंनेदहोय॥शब्दडारेनेदनाहिःवीवेककरी
 केंजोये॥६०॥शब्दमोंजोअवेप्रताःवाकोदीजेडार॥शब्दकोसाचमानेः

वाकेनजनमोंहार॥६१॥शब्दमोंजीवशीवमायाब्रह्मःचारअज्ञरजान॥सगु
 एनिर्गुणशब्दकहःवादवेवादमान॥६२॥शब्देनानामनहुयेःछदरनिजाए॥
 छत्रीसपावांडशब्देकीयेःशब्दपुरमान॥६३॥वाचांशतजीकेलननोभुले
 नांःआपणहोकेनाहि॥तदहिशब्दकानीशब्दहोयेःसमजमनकेमाहि॥६४
 हस्तअध्यात्मजाएशीष्यःग्रहनआधीतुत॥ईइआधीदेवतप्रताःकी
 याशक्तिसुत॥६५॥अध्यात्मचरणप्रताःआधीनतगती॥आधीदेवतउ
 पेइएःजानगमनशक्ती॥६६॥हथलेवेदेवेप्रताःचरणोंगतीहोय॥याके
 कर्मकोतुमाहीःअनुचवमोंजोये॥६७॥अध्यात्मगुदेईयेशिष्यःवीसर्ग

आधीनत॥ नैरुत्य आधीदेवतः नीर्वाहक्रीयासुत॥ ६८॥ अध्यात्मसाक्ष ईशियः
 आधीनतस्तीसुखहोय॥ प्रजापती आधिदेवतः क्रीयाशक्तजोये॥ ६९॥ अध्या
 त्मज्ञानजाहोः आधीनतविकारज्ञान॥ आधिदेवतकुरुपात्रीदेवकोस्था
 न॥ ७०॥ तुं अज्ञानकोसाक्षीः तानरुपहीमान॥ अज्ञानआत्मन्ममेहोयेः अ
 नुभवसों जान॥ ७१॥ तानघनस्वप्रकाशः स्वसंवेद्यजान॥ सबकोसाक्षी सबसों
 न्यासः आपकों तें मान॥ ७२॥ पंचप्राणपंचविशयाकोंः अध्यात्मविज्ञानाही
 ॥ वीखकेसरीखेमानाकेंः तजियेयाकों जाई॥ ७३॥ छबीशकलाकों लों गदेह
 क ह्योः सुनवाको विचार॥ जासों अपणों हीन होयेः पावे अतुल्यवसार॥ ७४॥

अंतःकरणपंचकहताः प्राणपंचकजान॥ बीशये पंचकजान ईशियः कर्म ईश
 यमान॥ ७५॥ पांचोपाचोपची सनयेः छबीसी कलाजीवजाण॥ यासंगसों भु
 लीकेंः करे देहको गुमान॥ ७६॥ यालों गदेहके संगसोंः ब्रह्मही जीवहोये॥ आ
 पकों आपनुलिकेंः बकवाकरे जोये॥ ७७॥ आपब्रह्मसो नुलगयोः मेदेह एसा
 माने॥ विषये सुखप्रीतसों नावेः संसारसाचजाणे॥ ७८॥ कनकबीजखायेसंः प्रा
 णी जैसे नुले॥ कारजविनांगममों फीरेः आपकों आपनूले॥ ७९॥ वैसो आत्मा
 देहसंगसोंः आपकों जीवमाने॥ मंपतीत चांडालः दीनहीन जाणे॥ ८०॥ दोणो देह
 के संगसोंः आपकों नुलो आप॥ मीध्याष्टष्टीको नास होईः जों दोरीको साप॥ ८१॥

अंधकारमें सर्पनासे वैसो भ्रमे जाव ॥ दोणो देहकों भ्रम जाते ॥ आपही सदा
 शीव ॥ ८२ ॥ जों अपने मुख अपणे पास ॥ दूजा दर्पण भासे ॥ दरपण तजते
 ना ॥ दुजा जावनासे ॥ ८३ ॥ वैसो उपाध संगमें शिष्य ॥ एक में अनेक नासे ॥ ८४ ॥
 पाध तजी कें देखाये तो जीव पाण नासे ॥ ८५ ॥ आत्मन् मेर लाकर तो को भु
 त पसी ॥ लीग देह को बीचार तो को ॥ कह्यो नीर्णय करी ॥ ८६ ॥ लीग देह को सा
 ही में ॥ ऐसा आप को जाण ॥ तुं पाको प्रकाशक ॥ अस रूप मान ॥ ८७ ॥ रत्ना
 कर कहें स्वामी ॥ पतीत पावन कीयो ॥ लीग देह को नीर्णय करी कें ॥ अनुभव
 सुख दीयो ॥ ८८ ॥ स्थूल सुक्ष्म को नीर्णय नयो ॥ कारण को कहो बीचार ॥ सत

गुरु कहें सुनरे रता ॥ ज्यासों पाई ए पार ॥ ८९ ॥ चौथा अध्या पूर्ण नयो ॥ आधों सा
 वध होये ॥ सावध हो कें अवण करे ॥ तो अनुभव वाकों होये ॥ ९० ॥ गुरु क्रुपे गमाने
 द ॥ बोले ब्रह्म तान ॥ रत्ना कर के संवाद सों ॥ नयो ग्रंथ नीर्माण ॥ ९१ ॥ प्रकाश रत्ना
 कर ग्रंथ यह ॥ ज्यासों आत्मा नासे ॥ देह बीदेही हो ए रह ॥ दुबी ध्या सर्व ही नासे
 ॥ ९२ ॥ ॥ इति श्री प्रकाश रत्ना कर ग्रंथ सुक्ष्म देह नीर्णय योगो नाम चतुर्थो
 ध्यायः ॥ ॥ सत गुरु कहें सुनरे रता ॥ ज्यासों पाई ये पार ॥ स्थूल सुक्ष्म दोनो
 देह ॥ बीश के शरीरे डार ॥ १ ॥ बीश स्वाये एक प्राण जाये ॥ देह संग में हान ॥ चोरा
 सील तयो नीर्णय ॥ बीटं बनाहि जान ॥ २ ॥ दोणो देह के साही होये कें ॥ सपने

मरीखेमान॥सुखदुखमीथ्याजाणीकें:तजीयेअजीमान॥३॥अजीमानकी
 जेसाचकों:दुखजेडार॥दुखमेंकष्टहीतनाहि:परीनामकोंहार॥४॥परीनाम
 कोंहारहोये:एसोकाहेकरण॥दोणोंदेहकोंतजीकें:जीवतांजीवसोंमरनां
 जीवतांजीवसोंमरनां:तदहीहीतहोये॥अनेकमोंयेकसाई:समदृष्टिजोये॥
 ५॥मेनाहिनसमाच:एसोधरीयेजाव॥तासोंतेरोहीतनाहि:तजदेहकीमाव
 ॥६॥कारणदेहकोनीर्णयकहो:ज्यासोंप्रकाशहोये॥रत्नाकरआपकोंआ
 पतें:फेरीकेंजोये॥७॥कारणदेहअर्थपर्व:स्यामवर्णजाण॥मकारमात्रकोंरु
 द्रेव:गोह्वारस्थान॥८॥पस्पंतीवाचामध्यस्थ:श्रुतमात्रुकाजान॥तमोगु

एसा मवेद:तेजतत्वमान॥९॥प्रलयक्रीयादहिएदीश:येमदेवजान॥अ
 तीकोएअतीदेव:अघोरमंत्रस्ररुकर॥१०॥वाचरीमुद्राजोतीकला:कपीमा
 र्गहोये॥महेशकाशहृदयेस्थान:कैलासलोकजोये॥११॥प्रातअजीमान
 विष्णुदेवत:मदांगवाद्युजान॥तृतीयपादगायत्री:ईसाशक्तिमान॥१२॥कु
 रस्तनीर्नयउदराती:अद्वैतानंदहोये॥सोहंअहंकारकारणदेहमों:रतना
 करतेंजोये॥१३॥इतनेमीत्येकेंकारणदेह:याकोंडारदेणों॥सबकेसाक्षीहो
 येकें:अनुभवसुखलेणों॥१४॥कारणदेहअज्ञान:नहीआपकोतान॥तुं
 तोतानरूपहीहे:अज्ञानमीथ्याजान॥१५॥अज्ञानकोलक्षणएसो:जैसी

सुषुप्ती जान ॥ सुषुप्ती में कबू जानना ही ॥ वाकों कहिये ज्ञान ॥ १७ ॥ ज्ञा
नही ज्ञान नयों ॥ अवस्था के संग ॥ स्फटिक जैसी उपाध सों ॥ दीसे अने करे
गा ॥ १८ ॥ अने करंग दीसे स्फटा ॥ स्फटिक वैसी नाहि ॥ तैसे आत्म जमें तो कों ॥ भा
से देह नाई ॥ १९ ॥ जायुत स्वप्न सुषुप्ती ॥ तानो अवस्था जोये ॥ उत्पत्ती स्थिति
प्रलये ॥ येही अखंड होये ॥ २० ॥ जाग्रुती अवस्था उत्पत्ती ॥ स्थिति स्वप्न मान ॥ सु
षुप्ती अवस्था प्रलय ॥ तुंसा ही मान ॥ २१ ॥ उत्पत्ती स्थिति प्रलये पुता ॥ यामों तुं ना
ही ॥ याके कर्म को साक्षी तुं ॥ अलख अगोचर साई ॥ २२ ॥ कारण देह को नीर र
ण जयो ॥ तज या को अजी मान ॥ माहाकारण को नीर नय कह्यो ॥ सुनी ये साव

धान ॥ २३ ॥ पांचमा अर्था एर्ण जयो ॥ छह में करो व्याख्यान ॥ ज्या सों तेरो संदे
ह जाए ॥ लागे गुरु को ध्यान ॥ २४ ॥ सत गुरु कुपेरा मानंद ॥ बोले आत्म तान ॥ र
त्ना कर के संवाद सों ॥ नयो ग्रंथ नीर्मनि ॥ २५ ॥ ॥ इति श्री प्रकाश रत्नाकर ग्रं
थ कारण देह नीर्वाण योगे नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ माहाकारण को वी
चार ॥ सुनी ये रत्नाकर ॥ ज्या तान सों ज्ञाना सुखी ॥ ध्यान धरे रां कर ॥ १ ॥ माहाका
रण देह नील वर्ण ॥ मसुरा प्रमाण जाए ॥ ईकार मात्रु का ईश्वर देवत ॥ ओठ पी
ठ को स्थान ॥ २ ॥ परावाचा माहाशुन्ये ॥ अर्ध मात्रु का जोये ॥ अथर्वण वेद वासु
तत्व ॥ सुध सत्व होये ॥ ३ ॥ सुर्व क्रीया उत्तर दीशा ॥ ऊवरे देव जाए ॥ वायु को ए

वायुदेवः तस्यैरुशायमानः ॥४॥ अगोचरी मुद्रा ज्वाला कलाः मीनमार्ग होये ॥ च
दाका रामुर्धनी स्थानः आश्रये लोक जेये ॥ ५ ॥ प्रत्यगात्मा अनीमानीः घनाका
रा वाद्य जान ॥ चतुर्थपादवों कारुः रुद्रदेवता मान ॥ ६ ॥ आदी शक्ती आत्मनी ए
यः बीदेहानंद होये ॥ श्री वोहं अहंकारः माहाकारण में होये ॥ ७ ॥ माहाकारण
को साक्षी तुं माहाकारण नाहि ॥ माहाकारण को जान तो कोः तुं अलेख सा
ई ॥ ८ ॥ अकार उकार मकारः अर्धमात्रा जान ॥ स्थूल सुक्ष्म मकारणः माहाका
रण मान ॥ ९ ॥ चार देह को नील्य करी कें तो को कह्यो जान ॥ तुं चार देह को
साक्षीः आपही ब्रह्म मान ॥ १० ॥ जाग्रती स्वप्न सुषुप्तीः तुर्या अवस्था जाए ॥ तुं

या को साक्षी पुताः आपही ब्रह्म मान ॥ ११ ॥ रूग्देव यजुर्वेदः सामवेद जान ॥
अथर्वण को जान तो कोः तुं साक्षी जाए ॥ १२ ॥ परा पस्पंती मध्यमा वैखरीः
चार वाचा साई ॥ चार वाचा को साक्षी तुं अनुर्वाच साई ॥ १३ ॥ तुं तो अनु
र्वाच्य सताः वाची क माया जान ॥ वाचांश को तजी कें कर आप को ध्यान ॥ १४
नुचरी खेचरी वाचरीः अगोचरी मुद्रा जान ॥ चार मुद्रा को साक्षी तुं पांच
मां आप को मान ॥ १५ ॥ अंडज जारज स्वेतजः उद्गीज वौधीखान ॥ तुं या को
साक्षीः अलेख अगोचर मान ॥ १६ ॥ या सब में मननी काली कें आप को की
जे नाहि ॥ आप में आप समा कें रहनीः जौ लोन डाल माहि ॥ १७ ॥ चार देह

कों एस मान जैसा देखा सपाणं ॥ जो जो कछु नास होई वास बकों तजना ॥
 १८ ॥ सपाणें में वैकुण्ठ गयो ॥ अथवा पद्म नर्क माहि ॥ जायुत हो कें देखीये तो
 दोनो पुतानाहि ॥ १९ ॥ ते ए एस पाण देखा ॥ तें सपाणें में नाहि ॥ माहाकारण को
 नीर्णय जयो ॥ आघों सावधानाई ॥ २० ॥ चार देह को ज्ञान ज्ञाकों ॥ ज्ञान देह वत
 जान ॥ ज्ञान देह को नीर्णय करो ॥ सुणीये सावधान ॥ २१ ॥ प्रकाश रत्नाकर ग्रंथ
 यह ॥ ज्ञासों सब कछु नासे ॥ चार देह को अंधकार ॥ अनुज वल तेना हासे ॥ २२ ॥
 चार वाचा चार वेद ॥ चार अवस्था जान ॥ चारो देह चार सुए ॥ चार प्राश्न
 समान ॥ २३ ॥ चार वाणी चार वर्ण ॥ चार मुक्ती नाई ॥ चार मुश को रत्नाकर ॥

२३

अंधेरा सब जाई ॥ २४ ॥ जीवशीव माया ब्रह्म ॥ अज्ञान में ए भासे ॥ प्रकाश
 रत्नाकर देखते ॥ सब हीनासे ॥ २५ ॥ अंधकार में रजु को सूर्य ॥ प्रकाश हो
 तेनाहि ॥ स्वामी रूपों चार देह को ॥ नाश हुवा साह ॥ २६ ॥ चार देह को में
 को ज्ञान ॥ में वामें नाहि ॥ ज्ञान देह को नीर्णय करी कें ॥ कहो मोकों साई ॥ २७ ॥ गु
 रूपों रामानंद ॥ बोले अनुज वतान ॥ रत्नाकर के संवादों ॥ ग्रंथ जयो नी
 र्णन ॥ २८ ॥ ॥ इति श्री प्रकाश रत्नाकर ग्रंथ माहाकारण निर्शन योगो नाम
 षष्ठोऽध्यायः ॥ ॥ रत्नाकर तेनाहि हो कें ॥ सब प्राप में मान ॥ ज्ञान देह को
 नीर्णय करो ॥ सुनीये आत्मान ॥ १ ॥ रक्त चेत स्पाम उपर ॥ हाराम सुरा प्रमान ॥

वाके परे ज्ञान देहः ज्ञासौ प्रकाश जान ॥ २ ॥ स्थूल देह अद्भुत हाथः रक्त वर्ण
 जान ॥ लींग देह अंगुष्ठ प्रमानः स्वेत वर्ण मान ॥ ३ ॥ कारण देह अर्ध पर्वः स्था
 म वर्ण होये ॥ माहाकारण मसुरा प्रमाणः नील वर्ण जोये ॥ ४ ॥ चार देह को प्र
 मान नयोः कैवल्य देह को नाहि ॥ वाके नीर्णय करी कैं कहोः सावध होए
 भाई ॥ ५ ॥ कैवल्य देह अप्रमानः अद्वितीय जान ॥ सदा शीव देव पुण्य गीरी
 नमर गुफा मान ॥ ६ ॥ एकार मानुका उन्मनी अवस्थाः परात्पर वाचा जोये
 ॥ नीर सुन्य नीरामयेः ज्ञान देह जोये ॥ ७ ॥ अनुचर्य मानुका ह्म वेदः चं
 इकी मा अवकाश ॥ रत्नाकर सावध होकेः सुन तजी कैं आस ॥ ८ ॥ उर्द्ध दीशा प्र

२४

ल देवः अधो दीशा जान ॥ इशान ब्रह्म रुक्ः स्फटीक वर्ण मान ॥ ९ ॥ पूर्ण बोध
 प्रबोधनी मुद्राः कलातीत कला जोये ॥ शेष मार्ग नीरा काशः शीखा स्थान हो
 य ॥ १० ॥ नीरा अये लोक शक्त देवताः सुखर वंश वाद ॥ नीरंजन अनी मानी
 पंचम परमार्थ पाद ॥ ११ ॥ क्षेत्र ज्ञान नीर्णय ब्रह्माजीः ब्रह्मानंद जोये ॥ अना
 मय अहंकारः ज्ञान देह में होये ॥ १२ ॥ में अरु परु पातीतः जात गोत में नाहि
 ॥ एसो अहंकार होतु हेः ज्ञान देह के माहि ॥ १३ ॥ मुज सो सब शृष्टी होयेः शृष्टी
 में मे नाहि ॥ सयले सरिखामो कोः याको नास होई ॥ १४ ॥ नास होई परी हेम
 थाः सावध मेहि जाए ॥ रत्नाकर वीनती करेः पूर्ण नयो ज्ञान ॥ १५ ॥ ज्ञान अ

तान नमने नमः मो मो दो एो नाहि ॥ सरा चरा तीत मेही ॥ सहज में कछू नाहि
 ॥१६॥ देह के कर्म गुण सों होये ॥ मंगु ए सों न्यारा ॥ सात्ती रूप सब में व्याप
 कः जै सो जल में तारा ॥१७॥ बध मुक्त हो एो नाहि ॥ मे तो सहजान दं ॥ सह
 जों सहज सब कछू होये ॥ मो कों नाहि छुध ॥१८॥ भाव न की जान ध्यान ॥ मा
 में कछू नाहि ॥ मो मो मे हि मेरा ॥ दुजी नम ए साई ॥१९॥ नम ए ग ई स्वा
 मी कृपा सों ॥ सा सा कछू नाहि ॥ मेरी एक वीन तीहि ॥ सु एो सत गुरु साई ॥२०॥
 ब्रह्म ज्ञान सों नमना मीरी ॥ नयो र ए प्रकाश ॥ बध मुक्त ता हो नाहि ॥ तुटे
 देह के पाश ॥२१॥ अनु नव सों नाहि हुये ॥ देह तो वया पीन ॥ सुख दुख प्रार

२५

ध्व नोगे ॥ मे तो या सों नान्ना ॥२२॥ देह के कर्म डार दीजे ॥ अथवा कीजे स्वामी ॥
 बोली ये कों मो न्य धरीये ॥ कहो अंतर जामी ॥२३॥ संसार की जे कों डार दीजे ॥
 जाई ए जंगल माहि ॥ चेत रहो ये की ज ड होई ये ॥ कहो मो कों साई ॥२४॥ सत गुरु
 रुक रे सुन रे हुता ॥ सहजों सहज रहनां ॥ शरीर नोग प्रार ध्वो होये ॥ नहि अप
 पनां करनां ॥२५॥ अप एां की या जो कछू होता ॥ तो देह सों वैकुंठ जाते ॥ दरी
 श को ए नोक्ता हुता ॥ बेठे बेठे खाते ॥२६॥ शरीर दुख कों त्याग कें ॥ होते साव
 कार ॥ सर्व शृष्टी का आप अखेले ॥ करते कारजार ॥२७॥ शरीर सुख कों
 हर को उच्चाहे ॥ दुख न चाह कोये ॥ सु ए रत्ना कर वित दे कें ॥ हो नारा सो हाये

॥२८॥

तजनांकरनां अपनां नही: ईश्वरी ईश्या होये ॥ अपणे मनमों आपोतें: वीचार
 करी कें जोय ॥ २९ ॥ कर्म त्यागनां करणें: नही अपणे हाथ ॥ चेतन रहनां अप
 चेतन होनां: सब झुटी बात ॥ ३० ॥ जंगल जानां गाममों रहनां: संसार डार
 दीजे ॥ जातत जी कें अजातमों: स्वहीत अपणें कीजे ॥ ३१ ॥ वाचात जी कें
 मोन्य धरणें: एसा मुख कहें ॥ अनुभव वीनां अंध प्राणी: दुख सुख कों स
 हें ॥ ३२ ॥ चार देह को नार नहि: तो लोचन मना जाए ॥ जौं नीद मों स
 पणें भासे: साच कर कें मान ॥ ३३ ॥ जो लोनी इत लो स्वप्न: साच कों दुख ना
 से ॥ वैसी देह संग सों पुता: प्रवैत नावनाना से ॥ ३४ ॥ जाग्रुती मों ये कहें

२६

सपणे मों हो ए अनेक ॥ वैसी देह संग सों: नम ए होये देख ॥ ३५ ॥ आंती सों
 प्रपंच साच: जौं स्वप्न नीद माहि ॥ नाना मत्त को स्वप्न देखे: बक वाकर
 नहि ॥ ३६ ॥ स्वप्न मों विलपातु हें: मंपतित अग्यान ॥ एक मों अनेक भासे
 दुवी धासों जान ॥ ३७ ॥ सगु ए नीगु ए ना वनक्ति: चर अप चर जान ॥ स्व जी
 न क पुन्य पाप: सपणें देखे मान ॥ ३८ ॥ ज्ञान अज्ञान प्रकृति परुश: जीव
 शीव जान ॥ माया अज्ञाना मत्त कों: हो ए मी प्या मान ॥ ३९ ॥ अद्वैत निश्चयी
 सपारवांड: चार वर्ण चार खाए ॥ अनंत ब्रह्मांड आदिकरी कें: सत्य भ्रम
 नामानी ॥ ४० ॥ जो जो मन बुधी मों आया: वा कों सपणें कहनां ॥ मन बु

दी को साक्षी हो कैं: सहजी सहजरहनां ॥ ४१ ॥ चार देह के वारे पुता: सबही
 मानहुट ॥ चार देह के साक्षी हो कैं: गमनामलुट ॥ ४२ ॥ सुख दुख सहजो
 होये: प्रापण सहजरहणं ॥ परावे देह सरीखा: अपणं देह करनो ॥ ४३ ॥
 अपणी धाया अपण पास: परीवा कैं हेत नाहि ॥ वैसा चार देह कैं: कुं पा
 नरे नाई ॥ ४४ ॥ सूर्य कीरणें मगज लज्जा से: परीवे डुट जाए ॥ वैसो चार देह
 कैं: रत्ना करतें मान ॥ ४५ ॥ करणं न करण तजि कैं: नीरहे तहो कैं रहनां ॥ श
 रीर जोग प्रारब्धो होये: जीतां जीव सों मरनां ॥ ४६ ॥ गलीत पुत्र जे सो पुता: वा
 पो आधीन होये ॥ प्रारब्ध आधीन वै सो शरीर: करी कैं सुखी होये ॥ ४७ ॥ सह

२९

ज आवणं सहज जाणं सहज करणं जोग ॥ रत्ना कर सहज सहज मो हो
 तहे: अष्टही जोग ॥ ४८ ॥ सहज जाव सहज नक्की: सहज धर्म सहज दान ॥
 सहज देणं सहज लेणं: सहज तान सहज ध्यान ॥ ४९ ॥ सहज तीर्थ सहज
 व्रत: सहज करे वक्रार ॥ सहज स्त्री सहज पुत्र: सहज हा संसार ॥ ५० ॥ सह
 ज गावे सहज रोवे: सहजें करे हांसी ॥ सहज राज सहज मजूरी: सहज बनवा
 सी ॥ ५१ ॥ सहज जात सहज अजात: सहज उदास नाई ॥ सहज कथा सह
 ज अवण: सहज मन न होई ॥ ५२ ॥ सहज निर्विकल्प सहज कल्पना: सहज
 वस्ति माहि ॥ सहज स्थीर सहज चंचल: संदेह कछू नाहि ॥ ५३ ॥ सहज योग

सहजयागः सहजसागः सहजनोगः॥ सहजेऽनंदः सहजचेदः सहजआ
 रोग्यसहजरोगः॥ ५४॥ आपसों सबजाणीकेंः आपकों डार दीजे॥ सहजर
 हनेजो जो होयेः साक्षी ते नोगीजे॥ ५५॥ आदमधे अवसानः तो कों कथू
 नाहि॥ सहजसर्वजाणीकेंः सहजरहनां जाई॥ ५६॥ जो जो तो कों भास हो
 यः ते ते सर्वही नासे॥ तं हर्ण ब्रह्म अविनाशः तो मो सब वसे॥ ५७॥ जै सो रा
 त दीन हो नोंः हे अकाश के माहि॥ रात दीन आवे जावेः अकाश अठल जा
 ई॥ ५८॥ वै सो तो मो पुताः उत्पत्त लय होये॥ उत्पत्त लय को साक्षी तुं वी
 चार करी कें जोये॥ ५९॥ सूर्य सो जै सो पूताः हो ए दीन रात॥ वै सो माया सो

जीव शीवः माया कहिये न्नांत॥ ६०॥ सूर्य अनावे दीन रातः जै सी पूताना
 ही॥ न्नांत अनावे वैसेः जीव शीव नाहि॥ ६१॥ जीव सो रात कहियेः जाहां
 प्रवीधी वेद्वार॥ पाप रुप कर्म होयेः ज्या सो आवे हार॥ ६२॥ शीव सो ही दी
 न पूताः वीधी युक्त कर्म होये॥ न्नांत सो दोनो दुयेः जान दृष्टी सो जोये॥ ६३॥
 मुख्य न्नांत सो अन्यथा न्नाति वा सो जीव सीवना से॥ मुख्य न्नाति के ल
 त्त एक होः ज्या सो संदेह नासे॥ ६४॥ अहं ब्रह्मास्मि मुख्य न्नांतः माया दु
 जी नासे॥ अन्यथा न्नांत सो माया द्विविध दी से॥ ६५॥ विद्या अविद्या पूता
 द्विविध माया जान॥ अविद्या सो जीव नासेः विद्या सो शिव मान॥ ६६॥

अविद्यामें जीव-आयोः वामों विकार जान ॥ देह के सुख दुख कोः आपले
 वे मान ॥ ६७ ॥ विद्यामें जीव-आयोः वामों विकार नाहि ॥ साक्षी रूप सब को
 जाएः जों बीब जल माहि ॥ ६८ ॥ विद्या अविद्या अंतसोंः अंतसाची नाहि
 रज्जु के बीखे जै सो पुताः सर्प नास होई ॥ ६९ ॥ सर्प नास माया होयेः वैसी
 माया जाए ॥ नाम रूप ये ही मायाः तज या को भान ॥ ७० ॥ अनुर्वच्य में अ
 हं ब्रह्मः ये ही माया जान ॥ अनुर्वच्य हो के रहियेः तद ही सुख मान ॥ ७१ ॥
 कहनां सुनना दोनो नाहिः हो के रहिये अवकाश ॥ आपमें सब जाणी के
 आप को ही जेनाश ॥ ७२ ॥ आपकों नाश करी केः सहज होये के रहिये ॥ जो

२७

लोघर में प्राणः तो लोचनी करीये ॥ ७३ ॥ रत्नाकर वीन तीकरेः पाव पर धरी के
 शीर ॥ नील ज होये के प्रसन्न करेः मन में धरी के धीर ॥ ७४ ॥ चार देह को नीरान
 करी केः जान नाहि कीये ॥ नाहि हो के अखंड रहनांः ए सो अनुज व दीयो ॥ ७५ ॥
 स्वामी कह घर में प्राणः तो लोचनी करण ॥ ये वाक्य सुणी के स्वामीः हुई मे
 को भ्रम ए ॥ ७६ ॥ देव जन्ती दोनो नाहिः जन्ती की न की करु ॥ नाम रूप दो
 णों मायाः ध्यान को ए को धरु ॥ ७७ ॥ माया वीनां जन्ती नाहिः माया अंत
 साई ॥ या को बोध मो को करोः ज्यो सो संशय जाई ॥ ७८ ॥ रत्नाकर ब्रह्म तु
 तेराः ब्रह्म माया नासे ॥ ये कसुनें के अनेक नंगः सो नी करे जै से ॥ ७९ ॥ सोन

नंगकीये: नंगमें सोनी नाहि॥ वैसो जगमें सोनी नाहि॥ अनेक नामे: परीहे अनेख
साई॥ ८०॥ अनेक नंगमें सोनायेक: वैसो जगमें हरी॥ हरी रूप तुं ही तेरा
जोये वीचार करी॥ ८१॥ शीवं भूता शीवं यजती: यैसो कहै वेद॥ अही क्य
नाव सो भक्ती कीजे: तजी के माया नेद॥ ८२॥ आर्त जिता सुरार्थार्थि: बोधि
भक्ती जान॥ ज्ञान भक्ती में भेद नाहि: तेही भक्ती जान॥ ८३॥ अनेक परमें
एक सुत: वैसो जगमें साई॥ साई में जग सारा है: यामें संदेह नाहि॥ ८४॥
जैसो सुत वैसी घड़ी: मोल हो एनाई॥ कपास सब में येक दोहै: वैसो जग
में साई॥ ८५॥ एक सुखी एक दुखी: उचनिच जान॥ कर्म के फल जानी के

माया माई कमान॥ ८६॥ उचनी च जान गोत: तजी के या को जान॥ अही क्य
नाव सो सब घर में: तजी ए जगवान॥ ८७॥ एसो नीगम सोध करे: वाको वीचा
र कीजे॥ अही क्य नाव सो भक्ती करी के: अनुभव सुरवलीजे॥ ८८॥ अही क्य
नाव की भक्ती कैसी: वाको विचार करो॥ अपणे हीत के कारण: शब्द मन में
धरो॥ ८९॥ तरंग पूजे सागर के: माटी के घर जान॥ नीर हेत सो भक्ति कीजे
वे भक्ती परमान॥ ९०॥ गुल पूजे गोडी के: कापड पूजे सुत॥ जीव सो शीव पू
जीये: अनेद सो पूत॥ ९१॥ सागर में तरंग माली के: सागर जैसो होये॥ वैसो
जीव जान तज ते: सबही ब्रह्म जोये॥ ९२॥ आप ब्रह्म होते पूता: सबही ब्रह्म

जाव॥ ब्रह्मसों ब्रह्मनासे: मीध्यामायामान॥२३॥ नामरूपईतनीमाया:
 और ब्रह्मही सारा॥ ब्रह्महोके नत्की करे: वही उतरे पारा॥२४॥ मेही श्रोता
 मेही वक्ता: एसा धरी एनाव॥ टालवीन वजाके लीजे हरी को नाव॥२५॥ दे
 व नत्त मेहि मेरा: अनुन वेष्टा कीजे॥ दैत नाव को तजी के: नत्की सुख ली
 जे॥२६॥ नत्की हे जी सब मों सार: जा ए अनुन वस्तानी॥ अनुन वसों नत्की
 करे: वाकी से चामानी॥२७॥ सेवा पानी निरहेत की: ज्या मों नही आना॥ ह
 री नत्की आदरे करे: संसार मों उदास॥२८॥ राह मे की सराये जैसी: वै सो सं
 सार जा ए॥ मेरा कष्ट्या मों नाहि: मेये कही माने॥ ए॥ ए॥ अनुन वसों उदास

39

होके: जैसी तै सो रहे॥ साधसंग सो प्रेम प्रीति: राम राम कह॥२९॥ रामना
 म सब मों सार: नाम जपे सुख होये॥ ज्या सुख मों दुख नही: अनुन वकरी
 जोये॥३०॥ अनुन वसों नत्की कीजे: मीतुं पण को डार॥ जो लो घट मों प्राण: क
 रणं नत्की सार॥३१॥ अवत्री चार नत्की कीजे: ज्या मों नेद नहि॥ अने कदी
 प मों येक प्रकाश: ए सो सब मों साई॥३२॥ मीठ की डरी अनेक: वामों चारता
 एक॥ अनेक नंग मों सुना: जै सो एक ही देख॥३३॥ साकर मों जै सी गोडी: परी
 मल का पुर जान॥ वै सो जीव जगदीस: अनुन वसों मान॥३४॥ काष्ट मों आग
 तीली मों तेल: जो फुल मों सुवास॥ वै सो सब घट मों: हे नुहरी को वास॥३५॥ दू

धर्मों घृतरसमें गोडः वैसो जगमें साई॥ यह जाणी कें नक्की कीजेः अने देन
 न्की नाई॥ ७॥ जे जे देखीये नुतः ते आत्मवत मान॥ गारनीर के न्याये सोंः सगु
 एनी गुण मान॥ ८॥ सगु एनी गुण दोनो एकः नमने देना से॥ आप ही ब्रह्म
 होतेः नम सहज ना से॥ ९॥ अने देन की केल नान कहेः ज्या सों हीत होये
 ॥ या कों मन में धरी केंः तजी ये वीख ये सोये॥ १०॥ ब्रह्मा विष्णु सनक सनंद
 नः वसी ब्रह्म जानी॥ नीत्या नीत्य नक्की करेः रां कर बेठा ध्यानी॥ ११॥ व्यास
 मुक वामदेवः नारद तुंबर जाण॥ उदवः अर्जुन जनक वीदेहीः अने देन की
 प्रमाण॥ १२॥ वीदुर श्रीया लभे वरु सीः ध्रुव प्रह्लाद जान॥ अने देन की तंभ

३२

मेंः प्रगट नये जगवान॥ १३॥ जाहां दुपदी स्मरण करेः ताहां ही प्रगट होये
 ॥ अने देन की केल नानः रत्ना कर ए जोये॥ १४॥ सगु एनी गुण एक कर
 जाणेः वही अने देन की॥ रत्ना कर वा कों कहियेः सायुज्यता मुक्ती॥ १५॥ वी
 धी युक्त कर्म कीजेः नीत्य नैमीत्य जान॥ मेक कर्ता या कोंः तजी कें अनी मान॥ १६
 वीधी कों वेहे वार देह कों हेः लुज कों क धूनाहि॥ वाके कारण कर्म कीजेः नी
 रहते सों नाई॥ १७॥ जे सों ज्या वर्ण कों कर्म कह्योः वै सो उने करणों॥ गु
 ए कें कर्म जाणी केंः आपन साक्षी रहनां॥ १८॥ अनुज व वीनां कर्म कीजे
 वा सों होई हान॥ मेक कर्म कर्ता ये सोः करतु हे गुमान॥ १९॥ अनुज व सों क

मकीजे: नकी औरतान ॥ आपकों नाहि करीकें: हरीरुप जगमान ॥ २० ॥ र
 लाकर कहे स्वामी: एण बोध कीयो ॥ मन बुधी सों परसाई: घर में बता कें
 दीयो ॥ २१ ॥ घर में बता दीयो स्वामी: ज्या सों प्रकाश होये ॥ शीत उष्ण
 ती ॥ जोत: नयनों माहि जोये ॥ २२ ॥ जोते जोत सब घर नासे: संदेह कछू
 नाहि ॥ जोत सें जोत मीला कें रहनां: आप ही अखेर वसाई ॥ २३ ॥ बोध में
 कछू बाकी स्वामी: मुज मोर ही नाही ॥ सत गुरु कहे सहजर हाये: आप में
 आप भाई ॥ २४ ॥ ए ग्रंथ पूरा भयो: सत गुरु कृपा करी ॥ अव ए मन न
 त्यकीजे: भाव मन में धरी ॥ २५ ॥ अतान को तान होये: अनक्त को भक्ती ॥

33

नीत्यने मखे ते प्राणी: पावे अपाणी मुक्ती ॥ २६ ॥ अवैराग्य को वैराग्य जान: वी
 वेक बुधी होये ॥ शान्ति समा आप में आवे: ब्रह्मरूप ही होये ॥ २७ ॥ सो आ
 वर्तन या के कीजे: मन न करी कें नाई ॥ सब घर में आत्मा नासे: संदेह सब
 ही जाई ॥ २८ ॥ संदेह जा एनी संदेह होये: ग्रंथ माहि सा ए सौ ॥ उपनीषद को
 रहस्य कह्यो: ज्या सों मारे मासा ॥ २९ ॥ गीता जागवत वेद में: गोप्य रहस्य
 जान ॥ अनुधी च मन बुधी पर: अखरव अगोचर मान ॥ ३० ॥ अखरव अगो
 चर सब सों नारा: वाकों व्याख्यान कीयो ॥ चार देह को नीरनि करी: आ
 त्मा बता दीयो ॥ ३१ ॥ द्वार का को जाते जाते: नवे पुरे में जा ए ॥ अंबर स

॥ के अदासोः ग्रंथ नयोनी मोन ॥ ३२ ॥ अज्ञान संवत्सर माघ मास शु
 क्ल नवमी जान ॥ गुरुवार रोहिणी नक्षत्रः पूर्ण नियो मान ॥ ३३ ॥ तस्मी के द
 क्षिण दे दो ए यो जने नाई ॥ मा ए क बाई के घर में नयोः नवे पुरे के मा
 हि ॥ ३४ ॥ तस्मी तीर बांग देव में रत्ना कर को स्थान ॥ दक्षिण प्रयाग ज्वा
 कों कहो एः प्रगट आधी छान ॥ ३५ ॥ गुरु कुपे गामानंदः बोले घर के माहि
 ॥ रतना कर शरीर जाणोः ज्वा कों चेत नाना हि ॥ ३६ ॥ नाम रूप शरीर कोंः
 आत्मा अनाम जान ॥ अनाम सोही सत गुरु साईः उन्ने कीयो व्याख्यान ॥
 ३७ ॥ पावा जै सो मधुर बाजेः और होव जावन हार ॥ वै सो रत्ना कर में सत गुरु

३४